श्रीकृष्ण सर्व ऐश्वर्यमय हैं, जिनमें से एक वैराग्य भी है। श्रीकृष्ण तो वास्तव में वैराग्य के अधीश्वर ही हैं, अतः उनकी लीला में वैराग्य का बहुधा प्रकाश हुआ है।

युद्ध वास्तव में दुर्योधन और युधिष्ठिर के बीच था। अर्जुन तो केवल अपने अग्रज युधिष्ठिर की ओर से लड़ रहा था। श्रीकृष्ण-अर्जुन उसके पक्ष में थे, इसलिए युधिष्ठिर की विजय निश्चित थी। युद्ध से जगत् के सार्वभौम सम्राट का निर्णय होने वाला था। संजय ने भविष्यवाणी की कि सत्ता युधिष्ठिर के हाथ में चली जायगी। उसने यह भी कहा कि विजयी युधिष्ठिर उत्तरोत्तर राजलक्ष्मी की वृद्धि को प्राप्त होंगे क्योंकि वे धर्मपरायण और पुण्यात्मा ही नहीं थे, वरन् दृढ़ सदाचारी भी थे। उन्होंने आजीवन कभी असत्य भाषण नहीं किया।

अनेक अल्पज्ञ मनुष्य समझते हैं कि भगवद्गीता तो बस युद्धभूमि में दो मित्रों के बीच का संवादमात्र है। वे नहीं जानते कि ऐसी साधारण पुस्तक शास्त्र के रूप में समादृत नहीं हो सकती। कुछ मूर्ख तो यहाँ तक कहने का दुस्साहस करते हैं कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध जैसे अनैतिक कार्य के लिए उत्तेजित किया। यहाँ वस्तु-स्थिति को स्पष्ट किया गया है — भगवद्गीता नीति का परमोच्च उपदेश है। नौवें अध्याय में नीति का परमोच्च उपदेश यह है, **मन्मना भव मद्भक्तः**। श्रीकृष्ण का भक्त बन जाना, श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाना सम्पूर्ण धर्म का परम सार है। स्वयं श्रीभगवान् का अंतिम आदेश है, **सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज**। भगवद्गीता का उपदेश परम धर्म और परम नीति का पथ है। अन्य मार्ग शुद्धिकारी और अन्त में इस पथ की ओर ले जाने वाले हो सकते हैं; परन्तु 'भगवान् श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाय', भगवद्गीता का यह अन्तिम आदश सम्पूर्ण धर्म और नीति की अवधि है। यह अट्ठारहवें अध्याय कर निर्णय है।

भगवद्गीता से बोध होता है कि दार्शनिक मनोधर्मी और ध्यान आदि आत्मानुभूति के पथ अवश्य हैं, परन्तु परम संसिद्धि तो पूर्ण रूप से श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाने में ही है। वस्तुतः यही भगवद्गीता के उपदेश का सार-सर्वस्व है। वर्ण और आश्रम तथा नाना धर्म-पथों के अनुसार संपादित होने वाले विधि-विधान के मार्ग को इस दृष्टि से गोपनीय ज्ञान का मार्ग कहा जा सकता है कि कर्मकाण्ड रहस्यमय हैं, अर्थात् जन-साधारण को इन की पूर्ण जानकारी नहीं है। परन्तु इन सब में कर्म, ध्यान और ज्ञान की उपाधियाँ रहती हैं। पूर्ण कृष्णभावनाभावित भक्तियोग के परायण होकर श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाना ही वास्तव में परम गोपनीय उपदेश है और यही अट्ठारहवें अध्याय का मर्म है।

भगवद्गीता का एक अन्यतम वैशिष्ट्य है—पद-पद पर घोषित किया गया है कि भगवान् श्रीकृष्ण ही यथार्थ तत्त्व हैं। परमसत्य की अनुभूति निर्विशेष ब्रह्म, एकदेशीय परमात्मा और भगवान् श्रीकृष्ण, इन तीन रूपों में होती है। परन्तु परमसत्य के पूर्ण ज्ञान का अर्थ है भगवान् श्रीकृष्ण का पूर्ण ज्ञान। जो श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है, क्योंकि ज्ञान के सब विभाग श्रीकृष्ण के तत्त्वज्ञान के ही अंश हैं।